International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal l -Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-I SSN: 2348-6848
p-I SSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

शिक्षक–शिक्षा में नवाचार के रूप में ई–लर्निंग अधिगम की उपादेयता

प्रतिमा तिवारी

अतिथि प्रवक्ता (शिक्षाशास्त्र विभाग),

सी0एम0पी0डिग्री कालेज, इलाहाबाद

(इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद)

सारांशिकाः–

प्रस्तुत अध्ययन में वर्तमान परिदृश्य में संचालित शिक्षक–शिक्षा में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकियों के प्रयोग द्वारा ई–लर्निंग अधिगम सामग्री का प्रस्तुतीकरण एवं प्रशिक्षु छात्रों हेतु प्रभावशीलता को समझने का प्रयास किया गया है। वर्तमान समय में शिक्षा के वैश्वीकरण एवं सार्वभौमिकीकरण के लिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी संसाधनों को शिक्षा–प्रक्रिया का एक अनिवार्य अंग के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। इसीलिए शिक्षकों के लिए भी संप्रेषण तकनीकियों के सफल संचालन की आवश्यकता को महसूस किया जा रहा है। शिक्षक शिक्षा में ई लर्निंग की उपयोगिता विषय विशेषज्ञ द्वारा क्रमबद्ध तरीके से शिक्षण कौशलों के सन्दर्भ में प्रस्तुत क्रमबद्ध प्रक्रिया के प्रस्तुतीकरण से सम्बन्धित है।

परिचयः– शिक्षण विज्ञान एवं कला है। विज्ञान से तात्पर्य क्रमबद्ध एवं अनुभव पर आधारित सूचनाओं के प्रस्तुतीकरण से है, जो छात्रों को उनकी जिज्ञासाओं के सम्बन्ध में संतुष्टि प्रदान करता है। वर्तमान समय में जनसंख्या वृद्धि के कारण छात्रों की संख्या में वृद्धि देखी जा रही है। भारतीय परिवेश में छात्रों की संख्या के सापेक्ष प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी बनी हुई है। इसलिए वर्तमान परिवेश में सूचना संप्रेषण माध्यमों की सहायता से एक साथ अधिक संख्या में छात्रों को शिक्षित करने का कार्य शिक्षक द्वारा किया जा रहा है। वर्तमान समय में सरकारी, गैर सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी स्कूलों में छात्रों को औपचारिक शिक्षण के साथ ही ई–लर्निंग माड्यूल सी0डी0में या डी0वी0डी0में भी उपलब्ध करायी जा रही है। इसीलिए वर्तमान

e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

शिक्षक–शिक्षा में शिक्षकों को सूचना एवं संप्रेषण तकनीकियों के सफल प्रयोग एवं ई–लर्निंग सामग्री के निर्माण हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। वर्तमान समय में शिक्षक–शिक्षा की संस्थाओं की कमी पर दूरस्थ शिक्षा एवं मुक्त विश्वविद्यालयों द्वारा भी शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद द्वारा 2 वर्षीय दूरस्थ शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है।

ई–लर्निंग अधिगम सामग्री के घटकः–

शिक्षक–शिक्षा में ई–लर्निंग अधिगम सामग्री के निर्माण में निम्नलिखित घटक उपस्थित होते हैं:–

1. अधिगम सामग्री के निर्माण के सामान्य उद्देश्य
2. अधिगम सामग्री के निर्माण के विशिष्ट उद्देश्य
3. अधिगम सामग्री के निर्माण हेतु विषयवस्तु
4. अधिगम सामग्री के निर्माण हेतु निश्चित शिक्षण विधि
5. अधिगम सामग्री के निर्माण हेतु विषय विशेषज्ञ का चयन
6. अधिगम सामग्री के निर्माण में सरल भाषा का प्रयोग
7. अधिगम सामग्री के निर्माण में क्रमबद्धता
8. अधिगम सामग्री के निर्माण में विषयगत सम्बद्धता
9. अधिगम सामग्री के निर्माण में सूचना स्रोतों की उपलब्धता
10. अधिगम सामग्री के निर्माण में विषयगत वैधता एवं विश्वसनीयता।

ई–लर्निंग अधिगम सामग्री का शिक्षक–शिक्षा में उपयोगः–

ई–लर्निंग अधिगम सामग्री का शिक्षक–शिक्षा में विशेष महत्व है। वर्तमान में पूरे भारत में अप्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या अधिक है। शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु उत्तर प्रदेश में नेशनल इंस्टीट्यूट्स आफ ओपेन स्कूल, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद द्वारा

e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

दूरस्थ शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत कार्यरत शिक्षकों को शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम से जोड़ा जा रहा है। शिक्षक–शिक्षा से सम्बन्धित पाठ्यक्रम को ई–लर्निंग माड्यूल के रूप में विकसित करके प्रशिक्षु शिक्षकों के लिए उपलब्ध कराया जा रहा है, जिससे प्रशिक्षु शिक्षक, शिक्षक–शिक्षा के उद्देश्यों, सिद्धान्तों एवं मॉडलों से परिचित हो सकें एवं भविष्य में कक्षागत परिस्थितियों में इन सूचनाओं एवं कौशलों का व्यवस्थित ढंग से प्रयोग कर सकें।

निष्कर्षः– वर्तमान समय में प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक प्रत्येक स्तरों पर शिक्षक–शिक्षा के प्रशिक्षण में ई–लर्निंग अधिगम सामग्री का प्रयोग बहुतायत के साथ शिक्षक–शिक्षा हेतु किया जा रहा है। प्रशिक्षुओं को अपनी गति एवं आवश्यकता से सीखने का अवसर प्राप्त हो रहा है। वर्तमान समय में ई–लर्निंग अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं लाभदायक है।

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1. त्रिपाठी, विवेकनाथ (2015); अध्यापक शिक्षा में प्रतिबद्धता, भारतीय आधुनिक शिक्षा, अप्रैल 2015, वर्ष 35, अंक 4 पृष्ठ 18–27.
2. भट्टाचार्य, जी0सी0 (2015); अध्यापक शिक्षा, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
3. छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2016 के ड्राफ्ट पर 5 अगस्त 2016 आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला के विचार अंश।
4. टीचर एजूकेशन करीक्यूलमः ए फ्रेमवर्क 1978, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।
5. लाल, रमन बिहारी (2013–14), भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं, आर0लाल बुक डिपो, मेरठ।